Open Access

IJASSH

International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities

(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 1, Issue 4, December 2023; Pages 12 – 16
DOI: 10.5281/zenodo.10570903
SRJIF Impact Factor (2023): 8.7

Original Research Article

नारी विमर्श का दस्तावेज : कठगुलाब

प्रा. डॉ. साळुंके शिवहार भुजंगराव

हिंदी विभाग, कै. बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय, उदगीर जिला: लातूर ४१३५१७ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: a.shivasalunke@gmail.com

Received: 17 October, 2023 | Accepted: 14 November, 2023 | Published: 15 November, 2023

समकालीन लेखन की परिचित महिला लेखिका मृदुला गर्ग का हिंदी साहित्य में अनूठा योगदान है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी मृदुला जी का साहित्य बहुआयामी है। उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, निबंध, यात्रा वृत्तांत तथा संस्मरण भी लिखे हुए है। लगभग 11 संग्रहों में उनकी 80 कहानियाँ संग्रहित हो चुकी है। 'उसके हिस्से की धूप', 'वंशज', 'चित्तकोबरा', 'अनित्य', 'मैं और मैं', 'मिलजुल मन' आदि उपन्यास के साथ-ही-साथ उनका 'कठगुलाब' उपन्यास बहुचर्चित रहा है। मृदुला गर्ग जी के साहित्य लेखन का दायरा व्यापक एवं सर्वस्पर्शी है। विभिन्न विषयों को लेकर उन्होंने साहित्य रचना कियी है। उनके लेखन के विषय मात्र बच्चे, परिवार, स्त्री-पुरुष संबंध आदि दायरे तक सिमीत नहीं है, उनके लेखन में समग्र समाज समावित हुआ है ऐसा कहना अतिशोक्ति नहीं हो सकता। मृदुला गर्ग के कथा साहित्य की नारी न तो आपने-आप को घर की चारदिवारों में कैद करती हैं, ना ही घर-परिवार को अपना समस्त संसार मानकर चलती है। मृदुला गर्ग के कथासाहित्य की नारी अपनी अस्मिता के प्रति सचेत है। वह अपने सामर्थ्य शक्ति के बल पर आत्मनिर्भर बनना चाहती है। इसका यथार्थ चित्रण उन्होंने अपने 'कठगुलाब' उपन्यास के नारी पात्रों के माध्यम से किया है। 'कठगुलाब' उपन्यास के नारी पात्र सजग, सतर्क एवं सचेत है जो नारी-विमर्श को चिन्हित करता है। मृदुला जी के लेखन में नारी-विमर्श किस प्रकार रेखांकित हुआ है। इसकी खोज करना प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है।

उपन्यास 'कठगुलाब' में चार प्रमुख नारी पात्र है जिसके नाम स्मिता, मारियान, नर्मदा और आसीमा हैं। तथा विपिन मजूमदार पुरुष पात्र हैं। सभी पात्र अपनी-आपनी कहानी स्वयं कहते है। उपन्यास की नायिका स्मिता है जो कथा के आदि से अंत तक सभी पात्रों से सम्बन्ध स्थापित कर पुरुष-प्रकृति को पूर्ण रुप से पहचानने का प्रयत्न करती है।

पुरुषसत्ताक समाज में आज तक स्त्री को वह दर्जा प्राप्त नहीं हुआ जिसकी वह बराबर की हकदार है। नारी को दोयम दर्जा देकर शिक्षा, संपत्ती, अधिकार से हमेशा दूर रखा है। स्त्री को देह के रुप में देखकर हमेशा से पुरुषप्रधान व्यवस्था ने उसका शोषण किया है। स्त्री को मात्र देह रुप में देखकर उसका नखशिख का वर्णन करनेवाली रीतिकालीन मानसिकता आज भी पूरी विकृत रुप में दिखाई देती है। आज के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा टेलीव्हिजन के विज्ञापन स्त्री को मात्र सौंदर्य तक ही सीमित रहने का पाठ पढा रहे है। मार्क्सवादी समीक्षक, प्रख्यात स्तम्भकार मीडिया विशेषज्ञ सुधीश पचौरी ने अपने लेख 'स्त्री जो महज त्वचा है' में लिखा है – "आखिर इतनी तरोताजा खाल क्यों चाहिए? तिस पर स्त्रियों की खाल ही क्यों चाहिए? मर्दों की खाल क्यों नहीं? इसलिए की मर्दों के लिए 'ताकत' का संदेश तय पाया गया है। मर्द 'ताकत' का प्रतीक माने जाते हैं। उन्हें लक्षित विज्ञापन उनकी कोमलता का बखान नहीं करतें। 'कोमलता' स्त्री का विशेषण ठहरा।"[१] तात्पर्य आज भी समाज में स्त्री को मनुष्य रुप में न देखकर देहरुप में देखने का मानो चलन पढ गया हैं। विज्ञापन के जरिय आर्थिक आय को वसुलने के लिए स्त्री देह बाजार की वस्तु बना दिया है।

'कठगुलाब' उपन्यास की नायिका स्मिता अपनें मां-बाप गुजर जाने के बाद अपनी बडी बहन नमिता तथा जीजा के साथ रहती है। हम अक्सर देखते है नारी का देह शोषण करनेवाले अधिकतर मामले में नजदिकी रिश्तेदार ही होते है, जो उसकी मजबूरी का फायदा उठा कर उसका यौन शोषण करते है। स्मिता का जीजा कामलोलुप आदमी है जो हमेशा स्मिता के साथ अश्लील हरकते करता रहता है। नमिता से बातचीत के दौरान स्मिता का जीजा कहता है – "आगे पढकर क्या करेगी, साली? पहले आँखों पर चश्मा चढा हुआ है। न सूरत, न नाजो - अदा। कोई इसको हाथ लगाने से रहा .... हा-हा-हा हमारे सिवा। और फौलादी पंजे से कंधा जकड उसने उसे अपने ऊपर गिरा लिया था। नमिता देख नहीं पायी थी कि उसकी दुहरी हुई देह के नीचे पति की हथेली उसका वक्ष दबोचे थी।"[२] स्मिता की बडी बहन नमिता को अपने पति के तेवर समझ आते है मगर वह भी मजबूर है उसे लगता है मैं कितने दिन स्मिता को घर रखूँगी। मर्दों का कोई भरोसा नही होता जब स्मिता अपने घर चली जाएगी तभी उसे शांति मिलेगी।

स्मिता का जीजा उसे मानव रुप में न देखकर केवल भोग्या वस्तु के रुप में देखता है। स्त्री के गुण, कौशल को न देखकर मात्र रुप-रंग को ही देखा जाता है। जिसके बारे में प्रसिध्द बांगला लेखिका तस्लीमा नसरीन के विचार दृष्टव्य है – "जिस दिन यह समाज स्त्री शरीर का नहीं, शरीर के अंग-प्रत्यंग का नहीं, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य सीख जाएगा, सिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य रुप में स्वीकृत होगी।"[३] स्मिता का जीजा एक दिन उसका बलात्कार करता है, उसकी बडी बहन नमिता उसे झूठ बोलती है तुम्हारा बलात्कार करनेवाला कोई चोर, उचक्का होगा जो घर का किमती सामान भी उठा ले गया है। तुम्हारे जीजा तो उस दिन कलकत्ता गए थें। अंत: जीजा द्वारा पूरी तरह अपमानित एवं घायल स्मिता घर से निकल कानपूर चली जाती है। कानपूर में अर्थशास्त्र में एम.ए. करके वह अमेरिका चली जाती है। अमेरिका में स्मिता को पतझड और शिशिर ऋतु में अपने घर में लगाए 'कठगुलाब' की याद आती है, केवल कठगुलाब की ही नहीं उसके जीजा ने किया उसका बलात्कार भी याद आता है इन यादों में वह परेशान जरुर होती है मगर उसकी जिजीविषा कभी खत्म नहीं होती। अध्ययन के दौरान स्मिता की मनोचिकित्सक डॉ. जारविस से मुलाकात होती है बातचीत के दौरान दोनों की निकटता पैदा होती है और दोनो विवाह कर लेते है। विवाह के कुछ दिन पश्चात डॉ. जारविस का असली चेहरा स्मिता के सामने आता है जारविस भले ही मनोचिकित्सक क्यों ना हो मगर वह भी स्वयं एक मनोरुग्ण है जो स्मिता का इलाज करने के बहाने उसका शोषण करता है – "उसकी हर चुप उससे उसकी देह भोगने का नया तरीका ईजाद कर लेती। पहले से ज्यादा तिरस्कारपूर्व, अपमानजनक और आशालीन।"[४] डॉ. जिम एक दिन स्मिता को आईने के सामने यौन सम्बन्ध

स्थापित करने की बात करता है स्मिता इन्कार कर देती है। जिम चिढकर स्मिता को बेल्ट से पिटने लगता है। तब स्मिता उसके हाथ में का बेल्ट छिनकर जीम की जोरदार पीटाई करती है और अपनी जान छुडाकर भाग निकलती है। स्मिता के पेट का गर्भ बेल्ट की मार से खाली हो जाता हैं। वह मन में सोचती है – "फिर एक बलात्कार पहले स्मिता पर, अब शिशु पर एक दरिंदा (जीजा) मर गया। इंतकाम का मौका दिए बगैर मर गया। अब इस आदमखोर जारविस को फरार होने का मौका न दूँगी।"[५] स्मिता रॉ नामक संस्था की मदद से जीम को सबक सीखाना चाहती है और पुरुषों को स्त्रियों का शोषक मानते हुए उनके विरुध्द अभियान छेडती है। तात्पर्य मृदुला गर्ग जी ने पुरुष की स्त्री के प्रति भोग्यवस्तु के रुप में देखने की हिन्र, विकृत मानसिकता का परिचय देते हुए स्मिता का पति को पिटना नारी सामर्थ्य तथा उसकी चेतना का जागृत होना दिखाना चाहती है।

उपन्यास में दूसरी मारियान की है मारियान ने अपने पहले पति से तंग आकर तलाक लिया है, वह अपनी माँ वर्जीनिया जो लिवर कैंसर से पीडित है उसकी देखभाल करती है। रिश्तों की अहमियत विश्वास, भरोसा, प्रेम के ऊपर होती है। मगर रिश्तों में हमेशा हमे धोका, छलावा, ईर्ष्या भाव ही देखने को मिलता है। मारियान इर्विंग पर भरोसा कर उससे शादी करती है। इर्विंग मात्र उसका फायदा उठाता है। मारियान ने लिखी हुई किताब भी इर्विंग अपने नाम से छपवाता है। मारियन को इर्विंग द्वारा मात्र आय प्राप्ती का साधन के रुप मे देखना खलता है। दोनों मे तलाक होता है। मारियान में प्रबल जिजिविषा है वह जीवन को अपने सलीके से जीना जानती है वह मायूस न होकर गैरी से शादी करती है। मारियान और गैरी को एक लडकी होती है, लेकिन गैरी उसे छोडकर न्यूजर्सी चला जाता है। मारियान के माध्यम से लेखिका हमे पश्चिम भौतिकवादी संस्कृति जो अर्थ को महत्त्व देनेवाली है उसकी पहचान करवाती है। रिश्तों में भावनाओं, जज्बातों की जगह आर्थिक स्थिति को महत्त्व दिया जाना रिश्तों को खत्म होने से नहीं बचा सकता।

उपन्यास की तिसरी नारी पात्र नर्मदा है। जो स्मिता की बडी बहन नमिता के घर में नौकरानी का काम करती है। नर्मदा भी अपनी जिजि और जीजा के सहारे जीवनयापन कर रही है। नर्मदा की सगी बहन और उसके पति नर्मदा के जीजा ने उसकी सम्पती हडप करने के लालच में नर्मदा से शादी कियी है। नर्मदा अपने सगे कहे जानेवाले रिश्तों के हाथ शोषण का शिकार बन चुकी है। नर्मदा का जीजा उसके साथ शादी करके उसका शोषण करता है और स्मिता का जीजा उसके साथ जोर-जबरदस्ती करके उसका यौन शोषण करता है। नर्मदा और स्मिता चाहे किसी भी वर्ग की क्यों ना हो शोषण का शिकार बन चुकी है। मर्द उन्हें भोग की वस्तु से उपर उठकर देखना ही नहीं चाहते। नर्मदा में सेवाभाव है और वह इसी की वजह से नमिता के लकवाग्रस्त पति की सेवा करती है। नर्मदा का जीजा जो उसका पति बना हुआ है जब नर्मदा को लेने आता है तो नर्मदा उसे कहती है – "फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो दोनों टाँगें तोड के सडक पर फेंक दूँगी। भडुवे जा अपनी बीवी के पल्लू में जाके सो। मैं तेरी रखैल ना थी, तू मेरी रखैल था। कमा-कमा के तुझे खिलाया मुस्टंडे, इसलिए कि तू और तेरी बीवी मिलके मेरा हक मारो। जा, नामर्द समझ के अपना हिस्सा माफ किया पर याद रख, एक दिन आके वसूल कर लूँगी।"[६] तात्पर्य नर्मदा अब अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है। अपने उपर हो रहे अन्याय, अत्याचार का मुस्तैदी से सामना करना जान चुकी है। अपनी बडी बहन तथा जीजा के खिलाफ आवाज उठा रही हैं।

उपन्यास का चौथा नारी पात्र असीमा है, जो प्रकृति से आजाद खयाल की है तथा पुरुष अत्याचारों को सहन करना अपनी नियति नही मानती। वह परम्परागत मानसिकता की द्वैतक नही है, वह आधुनिक नारी का प्रतिनिधिक पात्र है। अपने 'स्व' अपने 'अस्तित्व' के प्रति अधिक सचेत असीमा को अपनी क्षमताओं पर पूरा विश्वास है। अपने अस्तित्व को मिटाकर पुरुष के उपर अपना सर्वस्व मिटा देना वह मुर्खता समझती है। उसने अपना मूल नाम सीमा को बदलकर असीमा

रख लिया है। क्योंकि वह किसी सीमा में रहना पसंद नही करती। वह कहती है – "मुझे मर्दों से नफरत है। सब एक-से-एक बढकर हरामी होते हैं। सबसे बडा हरामी था, मेरा बाप लम्बा, तगडा, खूबसूरत हरामी।"[७] असीमा के पिता ने दूसरी शादी कियी थी, वह उसकी मां पर जुल्म करता था इसी वजह से असीमा के मन में मर्दों के प्रति घृणा और नफरत है। असीमा जब स्मिता की बहन नमिता के घर स्मिता की पूछताछ करने जाती है, तब नमिता और उसके पति का झगडा चल रहा था, नमिता का पति नमिता की पिटाई कर रहा था यह सब देखकर असीमा नमिता के पति की खूब पिटाई करती है।

'कठगुलाब' उपन्यास असीमा के माध्यम से लेखिकाने दबंग नारी का चित्रण किया है। असीमा नारी पर हो रहे अन्याय-अत्याचार तथा शोषण को कुछ हद तक नारी को भी जिम्मेदार समझती है। असीमा सोचती है कि नारी क्यों हमेशा पुरुषों के बहकावे मे आती है? क्यों शादी की रट लगाती है? क्यों मर्दों से अपना तिरस्कार करवाने पर तुली होती है। असीमा कहती है – "तिरस्कार से बढकर औरत को कोई मोह नहीं है। पहले पीछे-पीछे भागकर अवहेलना, अत्याचार, अन्याय की कमाई करेंगी फिर मर्द को शोषक-शोषक कहकर सारी उम्र रोएँगी, गरियाएँगी, प्रतिशोध की आग में जलेंगी। ऐसा कोप किस काम का, जो शहादत के मोह के नीचे दब जाए।"[८]

तात्पर्य स्त्री अपने-आप को सदियों से समर्पिता मानकर हमेशा से त्याग, सहनशीलता का प्रमाण देती आई है। यह सिलसिला आगे नही चलनेवाला आज स्त्री शिक्षित हो चुकी है, अपने उपर हो रहे अन्याय-अत्याचार, शोषण के चक्रव्यूह को समझ चुकी है। असीमा जैसे स्त्री पात्र इसका ज्वलंत प्रमाण है।

असीमा ने स्व-संरक्षण के लिए कराटे सीख लिए है। वह शादी-ब्याह के चक्कर में ना पडकर समाजसेवा करना चाहती है। परंपरागत सोच के चक्कर मे पडकर वह अपना अस्तित्व मिटाने को तैयार नही है। उसके उपर शिक्षा का प्रभाव है। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत सजग है। 'कठगुलाब' उपन्यास के नारी पात्र भले ही पुरुषों द्वारा पीडित, प्रताडित दिखाई दिए है, फिर भी वह जीवन की लढाई में हार न मानकर अपनी जिजिविषा को बरकरार रखने में सक्षम है। उपन्यास का अंतिम पात्र विपिन मजूमदार के माध्यम से लेखिका ने स्त्री-पुरुष संबंधो में संतुलन और समझ को दशार्या है।

प्रस्तुत उपन्यास मे पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला दिखाई देता है। पश्चिमी भौतिकवाद आज भारत जैसे विकसनशील देशों में भी अपनी जडे मजबूत कर रहा है। 'कठगुलाब' के नारी पात्र एक पुरुष को छोडकर दूसरे पुरुष के साथ बेझिझक शादी करती है अपने जीवन का हमसफर स्वयं चुनती है। अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है, उसका अबला रुप अब सबला रुप में परिवर्तित हो चुका है। 'कठगुलाब' के माध्यम से लेखिकाने स्त्री जागरण; स्त्री सशक्तीकरण, स्त्री को सजग करने का सफल पाठ पढाया है। स्त्री कि नियती अब बदल रही है वह शोषण की आदि नही बन सकती उसके अपने वसूल है, वह अपने अधिकार की लढाई में जागरुक सतर्क है। यह महत्त्वपूर्ण संदेश मृदुला गर्ग जी ने 'कठगुलाब' उपन्यास के माध्यम से दिया है। अत: कठगुलाब नारी-विमर्श का दस्तावेज बन चुका है।

संदर्भ सूची

१. संपा. डॉ. सुजितसिंह परिहार – 'गद्य तरंग', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली, पहला संस्करण 2020 पृष्ठ 95

२. मृदुला गर्ग – 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ 16

३. तस्लीमा नसरीन – औरत के हक में अनुवाद : मुनमुन सरकार, पृष्ठ 99

४. मृदुला गर्ग – 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ 49

५. वही पृष्ठ 50

६. वही पृष्ठ 189

७. वही पृष्ठ 165

८. वही पृष्ठ 185